* उपसंहार *

: उपसंहार :

मानव जीवन की विविधताओं का चित्रण करने का अधिक अवकाश उपन्यास में ही होता है। साहित्य में अन्य विधओं से ज्यादा उपन्यास विधा समाज के नजदिक है। उपन्यासकार इस कला में सबसे आगे होता हैं क्योंकि उपन्यासों के माध्यम से हम व्यक्ति को पूर्णतः समझ सकते हैं। उपन्यास पढ़कर हमें आनन्द मिलता ही है, साथ ही उपन्यासों द्वारा हम उन छिपे रहस्यों तक भी पहुँच जाते है, जिनकी जानकारी सामाजिक व्यक्तियों के माध्यम से कदापि संभव नहीं है। इस क्षेत्र में उपन्यास इतिहास से भी अधिक यथार्थ चित्रों को उपस्थित कर पाता है। क्योंकि वह प्रमाणों को आधार न मानकर अनुभवों को आधार मानता है, जिनका अनुभव हम सभी करते है। साहित्य की अन्य विधाओं की अपेक्षा उपन्यास विधा में जीवन का यथार्थ, सत्य, आवश्यक संभवना और स्वतंत्र व्यक्तित्व एवं अन्य मूल्यों का निरूपण अधिक मात्रा में दिखाई देता है।

हिन्दी के प्रगतीशील यथार्थ लेखन करनेवाले उपन्यासकार डॉ.देवेश ठाकुरने अनेक विधाओं पर अपनी कलम चलाई है। डॉ.देवेश ठाकुरने हिन्दी उपन्यास साहित्य को आज तक दस महत्वपूर्ण उपन्यास लिखकर अपनी विशिष्ठ प्रतिभा का एहसास करा दिया है। इनके उपन्यासो का कथ्य ज्यादा तर महानगरीय रहा है। लेखक ने अपनी आज तक की जिन्दगी बम्बई महानगर में गुजारी है। इसी वजह से इन्होंने महानगर की हर समस्या को देखा ही नहीं बल्कि भोगा भी है। इसी कारण उन्होंने "जनगाथा" में शकुन की कथा के साथ-साथ सामाजिक, राजनीतिक, आर्थिक, शिक्षा, साहित्यिक, महानगरीय आदि समस्याओं का सफलता से पर्दाफाश किया है। समकाली स्वनाकारों मे डॉ.देवेश ठाकुर का नाम अज्ञात तथा अपरिचित नहीं है।

प्रस्तुत शोध कार्य के दौरान किए गये "जनगाथा" के अध्ययन से यह ध्यान में आता है कि उन्होने अपनी साली शकुन की कहानी के साथ-साथ शकुन जिस परिवेश

में रहती थी, उस भारतीय परिवेश को चित्रित करने का सफल प्रयास किया हैं। "जनगाथा" यह लेखक का शिल्प की दृष्टि से उनके अन्य उपन्यासों से नया शिल्प प्रयोग प्रस्तुत करता है। डॉ.देवेश ठाकुर की विचारधारा में विश्वासों की खोखली व्यवस्थाओं पर अत्यंत सहज रूप में विरोध की एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं।

प्रथम अध्याय के अन्तर्गत डॉ.देवेश ठाकुर के जीवन परिचय, व्यक्तित्व की विशेषताएँ तथा कृतित्व का विवेचन करने के बाद हम निष्कर्ष के रूप में कह सकते है कि देवेश की जीवन और साहित्य सम्बन्धी दृष्टि प्रगतिशील रही है। उनकी धर्मिता रचना मूल रूप से मानववादी मूल्यों से प्रेरित हैं। रचनाओं का केन्द्रिय स्वर व्यवस्था विरोधी है। आज की व्यवस्था में व्याप्त विसगतियों, विद्रुपताओं और भ्रष्ट नेतृत्व पर उनकी लेखनी ने लगभग सभी रचनाओं में तिखे व्यंग्य प्रहार किये है। साहित्य समाज का दर्पण होता है। उसी तरह देवेशजी का साहित्य उनके बीते हुए अभावों, विषमताओं और कठोर संघर्षमय यथार्थ जीवन का प्रतिबिंब है। उनके "भ्रमभंग" उपन्यास में उनकी आत्मकथा ही प्रकट हुअी है। उनकी साली की मृत्यु कैंसर से हुई इस घटना पर लेखकने "जनगाथा" उपन्यास लिखा है। देवेश खुद एक अध्यापक होने के कारण उनके उपन्यास साहित्य में अध्यापक पात्र बार बार आए हैं।

देवेश ठाकुर उदार एवं फक्कड़ व्यक्ति, सड़ी-गली रूढ़ि परंपराओं के विरोधी प्रगतिशील विचारक, सूधी संपादक, बालसाहित्य प्रणेता, भावुक तथा रोमानी कवि और सफल रचनाधर्मी उपन्यासकार हैं। वे ईमानदार और व्यवस्थाप्रिय व्यक्ति सुरूची संपन्न तथा जिन्दादिल मित्र भी हैं। उनका व्यक्तित्व अत्यंत संघर्षशील तथा महत्वाकांक्षी रहा है। हिन्दी साहित्य में अपना विशिष्ट योगदान देनेवाला यह रचनाधर्मी व्यक्तित्व निश्चीत रूप से युवको तथा युवा रचनाधर्मियों के लिए प्रेरणादायी है।

द्वितीय अध्याय के अन्तर्गत निष्कर्ष के रूप में हम कह सकते हैं कि

"जनगाथा" यह उपन्यास डॉ.देवेश ठाकुरजी के अन्य उपन्यासों की भाँति नया शिल्प प्रयोग प्रस्तुत करता है। प्रस्तुत उपन्यास के शिवनाथ अपनी साली शकुन की स्मृतियों के दबाव से मुक्त होने के लिए पंद्रह वर्ष पूर्व की कहानी को लिखते हैं। तथा उसकी लेखन प्रक्रिया स्वयं अपने आप में एक कहानी बन जाती है। उपन्यास की इस कथा के साथ कई अन्य प्रासंगिक कथाएँ और घटनाएँ जुड़ी हुई है एक कथा पत्रकार जोशी की है, जिसके लम्बे-लम्बे संवादों के माध्यम से राजनीतिक एवं सामाजिक विसंगतियाँ, व्यभिचारिता तथा अराजकता के माहौल में फँसे जन-मन के आक्रोश की परिस्थिति इस उपन्यास को अर्थवान बनाती है। तो दूसरी कथा शंकर भैयूया की और साथ ही शकुन की जिन्दगी में आयी हुअी कई सहेलियों की कथाएँ हैं। जो इन समस्याओं के माहौल में अटक गयी हैं।

समस्याओं के जाल में फँसी हुअी नारियाँ इस जाल से निकलने की कोशिश तो जरूर करती है, कुछ निकलती भी हैं, लेकिन ज्यादा तर इसमें घूट-घूट कर अपने प्राण छोड़ देती हैं। सलमा, सरीता, शकुन और मानुषी वे अभागिनें हैं, जिनका न तो तकदीर ने साथ दिया और न ही उनकी कोशिशों ने। सही सोचकर जीवन का जुआ खेलनेवालों में मिसेज पूरीही एक मात्र सफल रही हैं। सरीता की त्रासदी के लिए बुजूर्गों का अविवेक उत्तरदायी है। सलमा हार गयी हैं क्योकि उसे सही दिशा नहीं मिली। सरीता पढ़ी-लिखी होकर भी संस्कार के कारण वह इस त्रासदी से बच नहीं पाती। शकुन अधिक आधुनिक विचारों से प्रेरित होकर भी और अपने खून के रिश्तों में रहकर भी अपनी पीड़ा और सोच को व्यक्त नहीं कर पाती। इसी जलन तथा कुण्ठा में बिस्तर पर पड़ी वह दुनिया से चल बसती है। सलमा, सरीता और शकुन की त्रासदी के लिए जातिय रूढ़िवादिता, सम्मिलित परिवार तथा दुर्भाग्य ही जिम्मेदार हैं।

उपन्यास के कथानक में आदि से अन्त तक लेखक की मौजूदगी यह भी एक विशेषता है। कथानक का प्रारम्भ लेखक शिवनाथ की स्मृतिजन्य व्यथा-कथा से होता है, और अन्त भी उसी की निराशजन्य पीड़ा से। युगीन जटिल समस्याओं को तथा स्वतंत्रता

के बाद के सैत्तीस सालों के नरक को प्रस्तुत किया गया है। आज की व्यवस्था अजगर की तरह यथा-स्थिति पर कुण्डली मारे बैठी है। जब तक यह व्यवस्था कायम रहेगी, तब तक न शकुन कैंसर से मुक्त हो सकती है और न ही समाज। हमे व्यवस्था के हर एक आयाम को बदलना हैं, जिसमें शकुन को कैंसर होता हैं, जोशी अर्ध विक्षिप्त होकर रहता है। सलमा शरीर बेचने पर मजबूर होती हैं, नवीन आत्महत्या करता है। तथा शिवनाथ मृतप्रायः होकर अंधेरी गुंफा में प्रवेश करता है।

कथानक से गुजरते हुअे हम जिन स्मृतियों, व्यक्तिचित्रों तथा परिवेशगत स्थितियों का साक्षात्कार करते चलते हैं वे हमारे अपने अनुभव का जीवन्त हिस्सा बनकर स्मृतियों को गहराई से कुरेदती हैं। यह महसूस हुए बिना नहीं रहता कि "जनगाथा" हमारी अपनी भी गाथा है। प्रस्तुत उपन्यास कथावस्तु की दृष्टि से उपन्यास के क्षेत्र में नयी जमीन तोड़ता है। प्रस्तुत सृजनात्मक कृति डॉ.देवेशजी की क्षमता, प्रतिभा, निर्भिक अभिव्यक्ति आदि का सुलभ फल है। साथ ही उपन्यास का अन्त दुखान्त है। अपने परिवेश के जन की गाथा की अपने में समेटते हुए शीर्षक "जनगाथा" भी अत्यंत समीचीन है।

तृतीय अध्याय के अन्तर्गत "जनगाथा" की पात्र योजना को देखे तो हम पाते हैं कि इतने अधिक पात्रों को लेकर उपन्यास में उनकी भूमिका का सफल निर्वाह करना दुस्तर कार्य था, किन्तु, "जनगाथा" के लेखकने इस दुस्तर कार्य को अंजाम देने में सफलता पायी है। पात्र योजना की सफलता इस बात में होती है कि हर पात्र चरित्र बनकर कथा में अपनी उपस्थिति की चरितार्थता प्रमाणित करें। तथा उससे समग्र कथा को कोई व्याघात न पहुँचे। "जनगाथा" में जहाँ एक ओर अपनी जिजीविषा से प्रभावित करनेवाले चरित्र शकुन, जोशी, सलमा, मोहिन्दर, मिसेज पूरी, मानुषी, शंकर भैय्या शुभांगी गड़करी आदि है, वहीं एसे सूच्च चरित्रों को भी बड़ी कलात्मकता से नियोजित किया गया है, जो अपनी उपस्थिति का एहसास करते हुए जिजीविषासंघर्ष गति प्रदान करते हैं। कॉलेज के अध्यापक, अस्पताल के कर्मचारी, साहित्यकार, राजनीति के कर्णधार आदि की सूचनात्मक

उपस्थिति को इसी रूप में देखा जाना चाहिए। चरित्रों से जहाँ कथा-सूत्र आगेसर करने तथा अपनी दृष्टि से स्पष्ट करने में सहायता ली गई है। परिवेश के विस्तृत क्षेत्र पर पात्रों के विविध रूप अपनी भूमिका की सार्थकता प्रमाणित करते है। "जनगाथा" के महत्वपूर्ण पात्रों में से प्रो.शिवनाथ तथा पत्रकार जोशी मध्यवर्ग का प्रतिनिधित्व करते हैं। महत्वपूर्ण पात्रों में से पत्रकार जोशी के चरित्र चित्रण पर ज्यादा ध्यान दिया है।

उपन्यासकार के पास प्रचुर भाषा-सम्पत्ति है और उसकी संरचना-प्रणाली अथवा व्याकरण पर उनका विशेष अधिकार है। उनके शब्द-भाण्डार में सहज प्रयुक्त होनेवाले बोल-चाल की शब्दावली प्रचुर संख्या में है। लेखकने उर्दू-अंगेजी शब्दों का ज्यादा तर प्रयोग किया है।

चतुर्थ अध्याय के अन्तर्गत निष्कर्ष के रूप में हम कह सकते है कि, "जनगाथा" उपनयास में लेखक डॉ.देवेश ठाकुरने महानगरीय समस्याओं का चित्रण यथार्थ रूप में किया है। खास कर इस उपन्यास का रंगमंच महानगरी बम्बई ही है। इस महानगर का तेज तथा संघर्षपूर्ण जीवन देवेशजीने अत्यंत गहराई के साथ सिर्फ देखा ही नहीं भोगा भी है। उन्होंने देखा है कि यहाँ गति जीवन है और संघर्ष ही जीवन का अभिन्न अंग हैं। यहाँ कदम-कदम पर धोखा है, असुरक्षितता और अपस्चिय का भाव बढ़ता ही जा रहा है। महानगरों में व्याप्त सभी सामाजिक, राजनीतिक, आर्थिक, पारिवारिक, शैक्षिक, साहित्यिक, महानगरीय आदि क्षेत्रों की बुराईयों को और पाखण्ड को न सिर्फ झाड़ा-बुहारा है बल्कि पानी डालकर साफ धोने का काम सफलता से किया है।

महानगरों की जनसंख्या बेहिसाब बढ़ती जा रहीं है। यहाँ एक समन्दर पानी का है तो दूसरा लोगों का। अनेक छोटे बड़े गावों से रोजी रोटी कमाने के लिए लोग महानगरों की ओर दौड़ते दिखाई देते है। महानगरों की अर्थाभाव की समस्या का सामना करनेवाले महत्वपूर्ण चरित्र पत्रकार जोशी एवं लेखक शिवनाथ का चित्रण सफलता से किया

है। महानगरों में पैसा भगवान बनता जा रहा है। जिसके पास पैसा है उसकी पूजा होती है। इस प्रकार अर्थ केन्द्रित रिश्तों-नातों का माहौल बनता जा रहा है।

प्रस्तुत उपन्यास में एक विशेष बात पर ध्यान देना आवश्यक होता है कि इसमें वर्तमान भारतीय राजनीतिज्ञों और लेखकों के प्रत्यक्ष नाम देकर उनकी आडम्बर पूर्ण राजनीति का पर्दाफाश करने का साहस लेखकने दिखाया है, जो आज तक हिन्दी साहित्य में किसीने नहीं किया। वर्तमान युगीन साहित्यकार की लेखनी रूपयों के आगे दिशाहीन होकर भौंड़ा साहित्य निर्माण कर रही है। शिक्षा जैसा पवित्र क्षेत्र भी बुरी तरह से राजनीति से प्रभावित हुआ है। प्रस्तुत उपन्यास में लेखक ने शिक्षा क्षेत्र मे व्याप्त बुराईओं तथा गन्दगी का चित्रण सफलता से किया है। लेखकने महानगरों के डॉक्टर और अस्पतालों की गन्दगी का भी यथार्थ चित्रण करनें में सफलता पाई है। आम जनता की गरीबी मरीजों की बुरी हालत तथा अस्पतालो में डॉक्टरी पेशा के आड़ में चलनेवाले अनेक बुरे कारनामों को प्रकट करने का कार्य "जनगाथा" में किया है। महानगरों की पैसो की चकाचौंध से भरी दुनिया में उन्होंने व्यक्ति की भावना को सर्व श्रेष्ठ माना है। समाज के सभी वर्गों उच्चवर्ग, मध्यवर्ग तथा निम्न वर्ग का महानगरीय जीवन उपन्यास का व्यापक कथ्य बना है।

महानगरों के कर्णधार नवधनिक, राजनेता, मन्त्री, पूँजीपती, अध्यापक, डॉक्टर, व्यवसायी, अधिकारी, मजदूर आदि सभी पात्र उपन्यास में आये हैं, जिससे महानगरीय जीवन की एक जिवंत तस्वीर आँखों के सामने उपस्थित होती है। मकान जैसी भयानक समस्या से पीड़ित व्यक्ति, अकेलेपन, वर्गविषमता, भ्रष्ट व्यवस्था और अर्थाभाव में फँसकर जिन्दगी के हर मोड़ पर विक्षिप्तता एवं असुरक्षितता का अनुभव करती हुअी कैसे जीवित रहता है, उसका मार्मिक चित्रण मिलता है। इसी के साथ-साथ चुनाव, भाषा, मँहगाई, गरीबी, प्रेस महानगरों और गावो में पानी की समस्या आदि अनेक समस्याओं का प्रकट करने का यथार्थ तथा सफल प्रयास किया है।

इस प्रकार लेखकने शकुन के कहानी के साथ-साथ सारे परिवेश में फैली हुअी गन्दगी को उच्च,मध्य तथा निम्नवर्ग के महानगरीय जीवन को "जनगाथा" का कथ्य बना दिया है। इस प्रकार उपन्यासकार "जनगाथा" में जनता की व्यथा के माध्यम से उनके जीवन की समस्याओं को उजागर करने में सफल बन गये है।

अनुसंधान की उपलब्धियाँ :-

अनुसंधान के प्रारम्भ में "जनगाथा" उपन्यास के संबंध में जो प्रश्न हमारे सामने थे उन प्रश्नों के उत्तर निम्नलिखित हैं।

प्रश्न १ : संरचनात्मक नवीनता की दृष्टि से "जनगाथा" का क्या महत्व है ? "जनगाथा"

— "जनगाथा" में न नायक हैं, न नायिका। यह देवेशजी का मिश्रीत शैली में लिखा हुआ पेहला उपन्यास है यही संरचनात्मक दृष्टि से नवीनता है।

प्रश्न २ : "जनगाथा" के प्रमुख पात्र किस वर्ग के है ?

— "जनगाथा" के प्रमुख पात्र मध्यवर्ग के है।

प्रश्न ३ : "जनगाथा" में कौन-कौनसी समस्याएँ उजागर हो चुकी है ?

— "जनगाथा" में सामाजिक, राजनीतिक, आर्थिक, शैक्षिक, साहित्यिक, महानगरीय आदि समस्याएँ उजागर हो चुकी है।

प्रश्न ४ : क्या "जनगाथा" शीर्षक सार्थक कहा जा सकता है ?

— "जनगाथा" शीर्षक सार्थक कहा जा सकता है।

प्रश्न ५ : क्या "जनगाथा" में शकुन की कथा को ही चित्रित करने का उद्देश्य रहा है ?

— "जनगाथा" में शकुन की कथा को ही चित्रित करने का उद्देश्य नहीं रहा है तो उसी के साथ-साथ अन्य कथाएँ भी चित्रित करने का उद्देश्य रहा है।

अनुसंधान की नई दिशाएँ :-

१. * "जनगाथा" में चित्रित महानगरीय जीवन। *

२. * "जनगाथा" में मध्यवर्ग का चित्रण। *

३. * "जनगाथा" में भ्रष्ट राजनीति का यथार्थ चित्रण। *